International Journal of Education and Science Research Review
IJESRR
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-3 May-June- 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

समकालीन भारतीय राजनीतिक संस्कृति में राष्ट्रवाद की धारणा पर बाल गंगाधर तिलक के प्रभाव का अनुशीलन

मुकेश कुमार
शोध-छात्र
विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सार

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक अग्रणी स्वतंत्रता सेनानी थे जो आधुनिक भारत में राजनीतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा के पथ प्रदर्शक थे। उनके अनुसार राष्ट्रवाद राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति निष्ठा का विचार है यद्यपि यह अमूर्त अवधारणा है तथा पाश्चात्य संकल्पना से थोड़ा भिन्न है। तिलक ने रामायण और महाभारत को उत्कृष्ट ग्रंथ माना, जिनका उपयोग राष्ट्रवाद की अवधारणा और विकास की सामान्य इच्छा और समाज की भलाई के लिए किया जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन लोकमान्य तिलक और राष्ट्रवाद के विचारों को समझने करने का एक प्रयास है कि तिलक इस धारणा से सहमत नहीं थे कि ब्रिटिश शासन से पहले भारत कभी भी एक राष्ट्र नहीं था। यह सत्य है कि भारत कई राज्यों में विभाजित था और विभिन्न धर्मो, भाषाओं, क्षेत्रों, लिपियों, संस्कृतियों की विविधता से भरा था राष्ट्र निर्माण के लिए ही उन्होंने शिवाजी उत्सव एवं गणपति महोत्सव का व्यापक जनअभियान आरंभ किया। इस आलेख में राष्ट्रवाद से संबंधित विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है।

मुख्य शब्द:

लोकमान्य तिलक, राष्ट्रवाद, स्वराज, भारतीय संस्कृति, इतिहास।

भूमिका

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को भारतीय राष्ट्रीयता का अग्रदूत माना जाता है, जिनमें स्वराज्य के प्रति दृढ़ संकल्प उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन के समग्र नेतृत्व में सर्वोपरि स्थापित करता है। भारत के इतिहास में देखें तो ब्रिटिश शासन से पहले भारत में कभी एक राजा का शासन नहीं था। भारत विविधताओं से भरा हुआ था। विभिन्न राज्य, धर्म, भाषाएं, क्षेत्र, लिपियां आदि थे। किन्तु ब्रिटिश राज से पूर्व भारत में, एक भाषा-एक धर्म, और सीमा जैसा कोई कारण नहीं था, जो अपने नागरिकों के भीतर मतभेद पैदा कर सके।

राष्ट्रवाद की अवधारणा:

भारतीय राष्ट्रीय नवजागरण और उसके विकास के निरूपण में बाल गंगाधर तिलक का अप्रतिम योगदान रहा है। स्वराज आंदोलन का अध्ययन करते समय राष्ट्रवाद के बारे में तिलक के दृष्टिकोण को जानना आवश्यक है। ये विचार न केवल स्वराज आंदोलन को जानने की समझ दे सकते हैं बल्कि हमें अपने देश में राष्ट्रवाद को बनाए रखने में भी मदद कर सकते हैं। उन्होंने आध्यात्मिक शक्ति एवं नैतिक साहस को प्राथमिकता प्रदान करते हुए राष्ट्रीयता की भावना में वृद्धि की।

तिलक ने भारतीय प्राचीन इतिहास और संस्कृति की चर्चा की है। 1905 में
उन्होंने महाभारत पर कुछ लेख लिखे जिन्हें वैदिक धर्म या हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है। हिमालय से लेकर श्रीलंका कि विभिन्न राजा देश पर शासन करते थे लेकिन यह धर्मों पर आधारित था। इन वर्षों के दौरान आयत और अनायत एक साथ आए। विभिन्न प्रातों में लोग एक साथ रहते थे और इसे राज्य कहते थे। (तिलक बी.जी. केसरी 30 मई 1905)।

ऐसे कई शक्तिशाली राजा थे जो जीत लेते थे लेकिन अपने अन्य राज्यों पर कभी शासन नहीं करते थे बल्कि केवल श्रेष्ठता की मांग करते थे और अन्य राजाओं और नागरिकों से धन एकत्रित करते थे और

स्वतंत्रता का आनंद लेते थे। महाभारत में भी, हम अन्य सभी राजाओं और राज्यों के अस्तित्व को देख सकते हैं।

तिलक ने कहा कि, भारत वर्ष में हर कोई रामायण और महाभारत को जाना था और नागरिक नैतिकता का पालन करते थे। तो रामायण और महाभारत भारत के भीतर सामान्य समानताएं हैं जिनका उपयोग राष्ट्रवाद के लिए किया जा सकता है। (तिलक बी.जी. केसरी - 14 मार्च 1905)

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में स्नातकों की एक नई शिक्षित युवा पीढी ने भारत में एक नई विचार प्रक्रिया का निर्माण किया। उनमें से अधिकांश पश्चिमी दर्शन, संस्कृति, शिक्षा, सामाजिक वातावरण और प्रगति के प्रति आकर्षित थे। शिक्षित होना और एक अच्छी नौकरी हासिल करना और एक अच्छी तरह से व्यवस्थित जीवन जीना एक दिनचर्या थी। वे वर्गहीन या जातिविहीन समाज में दृढ विश्वास रखते थे, देश की प्रगति के लिए सामाजिक सुधार लाना चाहते थे। उन्होंने सोचा कि ब्रिटिश शासन ईश्वर का उपहार है और उन्होंने ब्रिटिश शासकों से अंधविश्वासी अनुष्ठानों को बाधित करने के लिए कहा। (तिलक, बी.जी. केसरी 2 अप्रैल 1901)।

पश्चिमी शिक्षा में हमारा धर्म, नैतिकता, राष्ट्रवाद या राष्ट्रीय शिक्षा शामिल नहीं है। ऐसी शिक्षा हमें अपनी मातृभूमि के लिए स्वाभिमान या प्रेम नहीं सिखाती (तिलक बी.जी. केसरी 19 मार्च 1901)।

राष्ट्रवाद पर तिलक के विचार व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं। उन्होंने कहा, विविधताओं से भरा भारत कभी एक देश नहीं था। यह ब्रिटिश शासन है जिसने सभी राज्यों को एक छत के नीचे ला दिया। ब्रिटिश शासन के दौरान हमने दो चीजें सीखीं एक राजा और एक आधिकारिक संचार के लिए एक भाषा (अर्थात अंग्रेजी) (तिलक बी.जी. केसरी 3 सितंबर 1895)।

इस ब्रिटिश शासन के अलावा इसने प्रशासन कानून, आर्थिक निर्णयों सेना पोस्ट रेलवे, सड़कों मुद्रा आदि के माध्यम से इन प्रावधानों को एक साथ लाया। यहां तक कि उन्होंने हिंदू मुस्लिम, सिख, जैन, पारसी, बुद्ध, राजपूत सभी का इलाज किया।

संक्षेप में, भारत में केवल दो वर्ग हैं, अर्थात ग्रामीण और शहरी। इससे हमें (भारतीयों को) एक साथ आने में मदद मिली है और हमें अपने मतभेदों को सुलझाने और एक राष्ट्र के रूप में सोचने का मौका मिला है। विभिन्न धर्मो या जातियों के सभी लोगों को एक साथ आना चाहिए और अपनी प्रगति के बारे में सोचना चाहिए (तिलक, बी.जी. केसरी 19 दिसंबर 1896)।

तिलक इस तरह के सामाजिक सुधारों के विरोधी नहीं थे। वह इस बात से सहमत थे कि समय के साथ सामाजिक संस्थाओं और प्रथाओं को बदलना चाहिए। वास्तव में उन्होंने अपने तरीके से रूढ़िवादिता के खिलाफ लड़ाई लड़ी। हालाँकि, सामाजिक सुधारों का उनका सिद्धांत उन उदार सुधारकों से अलग था, जिनका उन्होंने विरोध किया था।

वह जैविक, विकासवादी और सहज सुधारों में विश्वास करते थे। उन्होंने लोगों की विरासत से प्रेरित और निहित क्रमिक सुधारों पर जोर दिया। उनका मानना था कि मानव समाज हमेशा प्रवाह की स्थिति में होता है और केवल क्रमिक तरीके से ही बदल सकता है। अतीत के साथ कभी भी अचानक और पूर्ण विराम नहीं होता है।

यदि अतीत के साथ अचानक और पूर्ण विराम कृत्रिम है, तो इसे हमेशा खारिज कर दिया जाता है। यह बदले में समाज में अव्यवस्था पैदा करता है। इसलिए तिलक उदार सुधारकों द्वारा विचार किए गए कठोर परिवर्तन के विचार का समर्थन नहीं कर सके। वह चाहते थे कि सामाजिक सुधारों को धीरे-धीरे लागू किया जाए। तिलक ने सुधारकों को अतीत की अस्वीकृति के प्रति आगाह किया।

उन्होंने सुधारकों से हमारी परंपरा की स्वीकार्य विशेषताओं को आजमाने और अनुकूलित करने (और संरक्षित) करने का आग्रह किया।

इसके अलावा, तिलक ने पश्चिम की विचारहीन संस्कृति के नकल का विरोध किया। तिलक ने इस विचार से कभी समझौता नहीं किया कि जो कुछ भी पश्चिमी है वह आवश्यक रूप से अच्छा है।

राष्ट्रवाद की धारणा पर बाल गंगाधर तिलक के प्रभाव का अनुशीलन

तिलक खुले विचारों वाले थे और पश्चिम के पास जो कुछ भी अच्छा है उसे स्वीकार करने के लिए तैयार थे। उदाहरण के लिए, उन्होनें राष्ट्रीय शिक्षा की अपनी योजना में पश्तिमी विज्ञान और प्रौद्योगिकी को शामिल किया।

राष्ट्रीय शिक्षा की उनकी योजना ज्ञान, परंपरा और संस्कृति की पश्चिमी और पूर्वी परंपराओं में सभी का एक अच्छा मिश्रण था। यह सामाजिक सुधार के तिलक के अपने प्रारूप की एक ठोस अभिव्यक्ति थी। तिलक के अनुसार भारतीय समाज में जो बुराइयाँ थीं, उनमें से अधिकांश विदेशी प्रभुत्व का परिणाम था। इसलिए तिलक के अनुसार सबसे महत्वपूर्ण कार्य स्वराज की प्राप्ति थी जिसे सभी लोगों के संयुक्त प्रयास से ही प्राप्त किया जा सकता था। जहां तक तिलक का संबंध था यह समाज सुधार से अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य था। उनका मानना था कि भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद ही सामाजिक सुधारों की शुरुआत की जा सकती है।

तिलक कानून के माध्यम से सुधारों को लागू करने के विरोधी थे। (पर्वते 1958) वह समाज के भीतर से आने वाले सहज परिवर्तनों के पक्षधर थे। तिलक का मानना था कि ऐसे सुधार ही प्रभावी होंगे। इसके अलावा, वह

एक विदेशी सरकार को भारतीयों के धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर प्रदान करने के खिलाफ थे।

तिलक के राजनीतिक दर्शन की जड़ें भारतीय परंपरा में थीं लेकिन इसने उन सभी चीजों को खारिज नहीं किया जो पश्चिमी थीं। वे प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक और दार्शनिक कार्यों से प्रेरित थे। इस प्रकार, उन्होंने स्वराज की अपनी धारणा को एक आध्यात्मिक अर्थ प्रदान किया। उनके विचार में, स्वराज एक राजनीतिक या आर्थिक अवधारणा से अधिक था। स्वराज एक कानून और व्यवस्था तंत्र से बढ़कर था। यह जीवन की आवश्यकताओं या आनंदमय जीवन की विलासिता प्रदान करने वाली आर्थिक व्यवस्था से भी अधिक था।

उनके अनुसार स्वराज पूर्णतः स्वशासन-राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक था। इस प्रकार, स्वराज केवल गृह शासन से अधिक कुछ नहीं था। होम रूल ने ब्रिटिश नियमों को तोड़े बिना स्व-शासन की एक राजनीतिक व्यवस्था का संकेत दिया। इसके अलावा, स्वराज ने अपने कर्तव्यों के निर्लिप्त निष्पादन को प्रेरित करने वाले व्यक्तियों के प्रबुद्ध आत्म नियंत्रण को भी निहित किया। तिलक चाहते थे कि मनुष्य आत्म-अनुशासन और आत्म-प्रयास के माध्यम से निम्न स्तर से ऊपर उठे और अपनी इच्छाओं को पूरा करके सच्चा सुख प्राप्त करें। इसलिए, वह न केवल अधिकारों का आनंद लेने में, बल्कि कर्त्तव्यों के निस्वार्थ प्रदर्शन में भी मानव जीवन की पूर्ति की कल्पना करता है।

मनुष्य को अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के अधिकारों की आवश्यकता है, न कि इच्छाओं के स्वार्थ के लिए। मनुष्य का स्वयं के प्रति, अपने परिवार के प्रति अपने परिजन के प्रति और अपने साथी प्राणियों और देशवासियों के प्रति कर्त्तव्यों है। उसे उन सभी के नैतिक, आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण के लिए काम करना है। यह उसका कर्तव्य है। हालाँकि, यह सब तभी संभव होगा जब स्त्री-पुरुष किसी भी प्रकार के वर्चस्व और नियंत्रण से मुक्त हों।

इस प्रकार स्वराज की प्राप्ति के लिए तिलक ने पश्चिमी उदार संस्थाओं की उपयुक्तता और संवैधानिक सरकार, कानून का शासन, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यक्तिगत की गरिमा आदि जैसी अवधारणाओं को स्वीकार किया।

राष्ट्रवाद एवं धर्म का समन्वय

राष्ट्रवाद मूल रूप से लोगों के एक समूह के भीतर एकता की भावना अपनेपन और एकजुटता की भावना को संदर्भित करता है। निःसंदेह तिलक ने कुछ वस्तुनिष्ठ कारकों जैसे सामान्य भाषा, सामान्य क्षेत्र में निवास, एकता और एकजुटता की व्यक्तिपरक भावना को बढ़ावा देने और मजबूत करने के महत्व को भी स्वीकार किया।

तिलक के अनुसार, एकता और एकजुटता की भावना मुख्य रूप से अपनी साझी विरासत से उत्पन्न होने वाले लोगों के बीच राष्ट्रवाद की महत्वपूर्ण शक्ति थी। एक साझा विरासत का ज्ञान और उस पर गर्व मनोवैज्ञानिक एकता को बढ़ावा देता है।

लोगों को प्रेरित करने के लिए ही तिलक ने अपने भाषणों में शिवाजी और अकबर का जिक्र किया। इसके अलावा, उन्होंने महसूस किया कि सामान्य हित की भावना विकसित करके एक सामान्य नियति जिससे संयुक्त राजनीतिक कार्रवाई से महसूस किया जा सकता है, राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत किया जा सकता है।

एकता का मनोवैज्ञानिक बंधन कभी-कभी निष्क्रिय हो सकता है। ऐसे में लोगों को जुटना होगा। वास्तविक और पौराणिक दोनों कारकों को इस प्रक्रिया में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभानी थी। तिलक का

मानना था कि धर्म, जिसमें शक्तिशाली भावनात्मक आकर्षण है, का उपयोग राष्ट्रवाद की सुप्त भावना के लिए किया जाना चाहिए।

तिलक ने राष्ट्रीयता की भावना जगाने में ऐतिहासिक और धार्मिक त्योहारों, झंडों और नारों के जबरदस्त प्रतीकात्मक महत्व को पहचाना। तिलक ने ऐसे प्रतीकों का बहुत प्रभावशाली प्रयोग किया। उनका मानना था कि जब लोगों को लामबंद करने की बात आती है तो ये कारक आर्थिक कारकों की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं। इस प्रकार, तिलक ने गणपति और शिवाजी त्योहारों के रूप में प्रतीकों के उपयोग का प्रचार किया, जिसने बाद में जबरदस्त भावनात्मक अपील हासिल की। उन्होंने मराठा और केसरी जैसे समाचार पत्रो का संपादन किया तथा उसके माध्यम से राष्ट्रीय चेतना को अधिक प्रसारित किया।

तिलक ने उल्लेख किया कि राष्ट्र के निर्माण के लिए धर्म, सीमा, भाषा और इतिहास एकमात्र मानदंड नहीं हैं, हालांकि वे राष्ट्र के विचार को उजागर करने में मदद करते हैं। हालांकि, राष्ट्रवाद के पीछे मुख्य कारण यह है कि प्रत्येक नागरिक को अपनी मातृभूमि पर गर्व होना चाहिए। उन्हें राष्ट्र के व्यापक हित में अपनी प्रगति के बारे में सोचना चाहिए। राष्ट्र के नागरिकों का साझा हित होना चाहिए।

1895-96 में तिलक ने शिवाजी जयंती उत्सव की शुरुआत की। इसके पीछे मुख्य कारण स्वाभिमान और राष्ट्रवाद का निर्माण करना था। तिलक ने कहा कि शिवाजी स्वाभिमान, मातृभूमि और राष्ट्रीय एकता की मूर्ति हैं। आजादी के विचार को पिछले कई सालों से भुला दिया गया था। शिवाजी महाराज ने स्वराज और स्वधर्म की स्थापना की। राष्ट्र निर्माण के लिए ऐसी मूर्तियों की आवश्यकता होती है, जो शक्ति, साहस और स्वाभिमान पैदा कर सकें। हमें ऐसे त्यौहार मनाना चाहिए जो हमें हमारे महान नेताओं के बारे में याद दिलाएं, जिनके जीवन रेखाचित्र हमें हमारे राष्ट्र के लिए काम करने के लिए सर्शत्त बना सकते हैं (तिलक बी.जी. केसरी 2 जुलाई 1895)।

तिलक ने यह भी कहा कि राष्ट्रवाद को भौतिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए। यह एक विचार, निर्णय इच्छा या भावना है जिसे महसूस किया जा सकता है लेकिन देखा नहीं जा सकता है। प्रत्येक राष्ट्र को इस बात का ध्यान रखना होगा राष्ट्रवाद की भावना को बार-बार बताया और बनाया जाए। (तिलक बी. जी. केसरी 28 अप्रैल 1896)।

1895 में कांग्रेस अधिवेशन के दौरान, तिलक ने उल्लेख किया कि बंगाल, पंजाब, मद्रास, सिंध, पारसी, मुस्लिम आदि के प्रतिनिधि सभी की भलाई के लिए राजनीतिक समस्याओं को हल करने के लिए एक साथ आए थे। यह अपने आप में राष्ट्र की एकता और भावी राष्ट्रवाद का उदाहरण है। (तिलक , बी.जी. केसरी 6 अगस्त 1895)

तिलक के अनुसार भारत में धर्मों और भाषाओं की विविधिता होने के कारण यह संयुक्त राज्य अमेरिका जैसा हो सकता है। इसके अतिरिक्त, भारत में विभिन्न प्रांतों को राष्ट्रवाद की भावना के साथ एक साथ आना चाहिए। हम मानव शरीर के उस अंग की तरह है जहां अगर आँखों में कोई समस्या है तो इसका मतलब यह नहीं है कि हाथों को मदद नहीं करनी चाहिए। यदि शरीर के सभी अंग एक साथ काम नहीं करेंगे, तो मृतप्राय हो जाएगा। (तिलक बी.जी.)।

लोकमान्य तिलक वेदों और हमारे प्राच्य ज्ञान के प्रशंसक थे। तिलक ने श्रीमद्भागवत गीता अर्थात गीतारहस्य-कर्मयोग शास्त्र पर लेख लिखा। निष्काम कर्मयोग की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा है कि व्यक्ति को केवल अपने लिए नहीं बल्कि समाज के हित के लिए कार्य करना चाहिए। उसे अपने, अपने परिवार, समाज और राष्ट्र की तरह सोचना चाहिए।

विचार-विमर्श:

तिलक के अनुसार, यदि आप राष्ट्र की भलाई के लिए काम करते हैं क्योंकि आप राष्ट्र का हिस्सा हैं तो आप अपने राष्ट्र के साथ प्रगति कर सकते हैं जैसे एक रुपये में 100 पैसे शामिल होते हैं। राष्ट्रवाद की भावना दूसरों की मदद करने के लिए पैदा होती है। जब यह अधिनियम किसी राष्ट्र के लिए सीमित होता है, तो इसे राष्ट्रवाद या राष्ट्र प्रेम कहा जाता है।

दूसरों की मदद करने के विचार को दुनिया या सभी इंसानों के लिए व्यापक बनाया जा सकता है। मनुष्य और व्यक्तियों के बीच एक राष्ट्र है। राष्ट्र के सभी नागरिकों के समृद्ध होने का एक समान कारण है। यदि राष्ट्र समृद्ध होता है तो सभी को समृद्ध होने का अवसर मिलता है। इसी तरह, यदि राष्ट्र पीड़ित होता है तो सभी पीड़ित होते हैं। वैश्विक राष्ट्र एक आकर्षक विचार है। लेकिन हमें इतिहास में कोई उदाहरण नहीं मिलता जिसमें प्रेम, समानता जैसी बातें सभी को स्वीकार हैं। हालाँकि, व्यावहारिक रूप से हमें ऐसे उदाहरण नहीं मिल सकते हैं (तिलक बी.जी. 1906)

61वीं जयंती, 23 जुलाई 1917 को लोकमान्य तिलक ने कहा, 'हमारी मातृभूमि को हमसे कुछ उम्मीदें हैं और इसलिए मैं आप सभी से अपील करता हूं कि एक साथ आएं और बिना किसी मतभेद के हमारे राष्ट्र के लिए काम करें। हमें राष्ट्र को भगवान (राष्ट्र देव) के रूप में मानना चाहिए (के लकर एन.सी.)।

स्वतंत्रता का विचार या भावना आत्मा की जो कभी नहीं मरती। राष्ट्रवाद की भावना नहीं होगी तो राष्ट्र मृत शरीर बन जाएगा। संक्षेप में, राष्ट्रवाद स्वतंत्रता की अवधारणा के लिए अनिवार्य है।

साम्प्रदायिक सद्भाव एकता और अखण्डता

तिलक चाहते थे कि हिंदू और मुसलमान दोनों एक समान रूप से राष्ट्र को मजबूत बनाने में अपना योगदान करें। भारत में हिंदू बहुसंख्यक हैं। हिंदुत्व सामान्य मान दंडों में से एक है जो राष्ट्र के निर्माण में मदद कर

सकता है। सभी हिंदू या मुसलमान या किसी अन्य धर्म के लोग जो भारत में पैदा हुए और पले-बढे हैं उन्हें भारत को अपनी मातृभूमि मानना चाहिए। इसलिए, उनकी सभी महत्वाकांक्षाएं भारत की समृद्धि में टिकी हुई हैं। (तिलक बी.जी. 1899)।

तिलक चाहते थे कि हर कोई अपने अहंकार, संदेह या गलित फहमियों को एक तरफ रख कर एक राष्ट्र का निर्माण करे। वह एकता के साथ विविधिता चाहते थे। जिसके लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की, विभिन्न धर्मों के सभी नेताओं को राजी किया और लखनऊ में 29 दिसंबर 1917 को कांग्रेस में एकजुट किया जहां शेर की दहाड़ राज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा। सहमति लेकर रहूँगा की घोषणा की गई थी। प्रसिद्ध लखनऊ संधि ने हिंदुओं और मुसलमानों को एकजुट करने के लिए एक साथ लाया और स्वतंत्रता की मांग की।

लोकमान्य तिलक हमेशा संसदीय लोकतंत्र की बात करते थे। राष्ट्र की अवधारणा को विकसित करते हुए उन्होंने इसे वैदिक दर्शन पर आधारित किया। उनका मानना था कि वैदिक धर्म एक दूसरे की मदद करने या दूसरों के लिए काम करने के लिए कहता है। वैदिक धर्म दूसरे के विचारों को स्वीकार करता है। हजारों सालों से ये सभी नागरिक एक-दूसरे की बातों को मानते आए हैं।

वास्तव में, भारत एक राष्ट्र के रूप में सभी धर्मों, विचारों, संस्कृतियों आदि को समाहित करता है और विविधता में एकता लाता है।

5 मई 1905 को तिलक ने अपनी राय स्पष्ट् कीः एक भारतीय देशभक्त का पहला कर्तव्य यह पूछना है कि क्या भारत के लोग एक राष्ट्र हैं। सभी की जुबां पर यही जवाब आया कि भारत एक राष्ट्र है। एक भारतीय देशभक्त का काम आसान नहीं है उसे चरित्र के विकास के लिए कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए जिसमें उन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करना शामिल है जो कर मानव रचना हैं।

वेदांतिक आदर्शों और देशभक्त के आदर्शों में कोई विरोध नहीं है। प्रगति का अर्थ है हर समय बदली हुई परिस्थितियों के अनुकूल होना। समाज एक जीवित संगठन होने के कारण बदली हुई परिस्थितियों में स्वयं को ढालने में असमर्थ होने के कारण यह अस्वाभाविक था।

भारत में सामाजिक संगठन निश्चित रूप से मरा नहीं है यह शायद सो रहा है और नींद कोई मृत्यु नहीं है और देर-सबेर जागना निश्चित है। भारत में देशभक्ति में राष्ट्रीयता और नस्लों की जागृति शामिल है। सीमाओं को चौड़ा किया जाना चाहिए_ एक समग्र देशभक्ति के आदर्श को प्राप्त किया जाना चाहिए

वर्ष 1919 में, तिलक ने मुंबई में डॉ- वेलकर के घर पर एक छोटी सभा को संबोधित किया। इस मौके पर बिपिनचंद्र पाल, मद्रास के सत्यमूर्ति, आंध्र के चक्करंग चित्ती, हरचंद विशंबर सिंध, पंजाब के दीवान चम्मन लाल, असम के डॉ- गोपीनाथ बारदोलोई जैसे कई प्रमुख नेता मौजूद थे।

तिलक ने कहा, हिन्दुस्तान में हमारे बहु मतभेद हैं। यदि हम सभी मतभेदों के साथ, एक नाव में इंग्लैंड की यात्रा करना शुरू करते हैं तो ईडन पोर्ट तक हम देख सकते हैं कि बहुत कम अतंर हैं। जब हम स्वेज नहर के माध्यम से लाल सागर की यात्र करते हैं तो कुछ और अंतर कम हो जाएंगे। जब हम आगे की यात्रा करते हैं तो कोई विभेद नहीं रहता। हम गुलामी में हैं, हमारा देश गुलामी में है, यही एकमात्र आम समस्या है जो हमारे दिमाग में रहती है। लोकमान्य तिलक के शब्द हमें धर्मनिरपेक्षता, सर्वधर्म समभाव और राष्ट्रवाद की अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

बहुत से लोग यह नहीं जानते होंगे कि हजारों वर्षों की वैदिक परंपरा के बावजूद एक राष्ट्र के रूप में भारत उन्नीसवीं शताब्दी में तुलनात्मक रूप से एक नई अवधारणा है। लोकमान्य तिलक ने इसकी प्रगति पर विचार करते हुए देश के विभिन्न कोणों पर विश्लेषण किया और बात की।

तिलक ने सामान्य कारकों की पहचान करने की कोशिश की और राष्ट्रवाद के बारे में बात की। राष्ट्रवाद पर तिलक के विचार आधुनिक, मजबूत, लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष भारत के लिए व्यावहारिक, यथार्थवादी और दूरदर्शी दृष्टिकोण पर आधारित थे।

निष्कर्ष:

इस शोध कार्य का उद्देश्य लोकमान्य तिलक और राष्ट्रवाद के विचारों का अध्ययन करना था। इसे धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा, एकता की भावना, लोकतंत्र, संघीय राष्ट्र, राष्ट्रीय विकास में आत्म विकास, राष्ट्र की एकता और स्वराज की अवधारणा से लेकर विभिन्न तत्वों से उजागर किया गया है। राष्ट्रवाद की खोज हमें लोकमान्य तिलक द्वारा निर्धारित विचारों की ओर ले जाती है।

संदर्भ

1- पी-आर- (1957): धर्मनिरपेक्षिता की एक अनुदृष्टि । विविध व्रत दीपावली

2- तिलक बाल गंगाधर, (1905 , 7 मई): ड्यूटी ऑफ इंडियन पार्टियट, महरत्ता, (7) पीपी. 548.

3- तिलक बाल गंगाधर, (1899 ,1 अगस्त): हिंदू और मुस्लिम, केसरी अखबार

4- तिलक बाल गंगाधर, (1906 1 अगस्त): हिंदू और मुस्लिम, केसरी अखबार

5- तिलक बाल गंगाधर, (1908) संघीय राज राष्ट्र: समग्र तिलक, (6) पीपी. 400 से 404

6- तिलक बाल गंगाधर (1895 ,2 जुलाई) : शिव जयंती उत्सव केसरी अखबार

7- तिलक बाल गंगाधर (1896, 28 अप्रैल) : शिव जयंती उत्सव केसरी अखबार

8- तिलक बाल गंगाधर (1895, 6 अगस्त): शिव जयंती उत्सव केसरी अखबार

9- केलकर नरसिम्हा चिंतामन (1899): लोकमान्य तिलक यांच चरित्र वरदा बुक्स पब्लिकेशन, पुणे।

10- तिलक बाल गंगाधर (19 दिसंबर 1896): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

11- तिलक बाल गंगाधर (19 मार्च 1901): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

12- तिलक बाल गंगाधर (3 सितंबर 1895): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

13- तिलक बाल गंगाधर (2 अप्रैल 1901): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

14- तिलक बाल गंगाधर (14 मार्च 1905): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

15- तिलक बाल गंगाधर (30 मई 1905): संस्कृति पर विचार, केसरी अखबार

16- Parvate,T.V.(1958),Bal Gangadhar Tilak : A Narative and life career and contemporary event, 1st Edition , navjivan publishing house, Ahamadabad.